



वैश्विक हिंदी पत्रिका

(वैश्विक हिंदी परिवार का मासिक)

वर्ष 1-अंक 6

जून, 2024

इस अंक में

- मुख्य गतिविधियाँ - पृष्ठ 1
- संपादकीय - पृष्ठ 2
- अग्रलेख - पृष्ठ 2
- वैश्विक हिंदी परिवार कार्यक्रम: पृष्ठ 3
- वातायन कार्यक्रम : पृष्ठ 4
- विश्व परिक्रमा- पृष्ठ : 5 एवं 6
- पुस्तक समीक्षा-कविता : पृष्ठ 7
- साक्षात्कार - पृष्ठ 8

संरक्षक सहयोग

डॉ. जय वर्मा
ब्रिटेन



डॉ. रजनी सरिन
भारत



मॉरीशस में मनाया गया अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव

भोजपुरी भारत ही नहीं बल्कि सभी गिरमिटिया व इंडियन डायस्पोरा देशों की भाषा है। हमें इसे बढ़ावा देना चाहिए। इस आशय के साथ 6 से 8 मई, 2024 तक मॉरीशस में 'अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव' सम्पन्न हुआ जिसका उद्घाटन मॉरीशस के प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ और समापन राष्ट्रपति पृथ्वीराज सिंह रूपन ने किया। भारत से भोजपुरी भाषा के सुप्रसिद्ध कवि मनोज भावुक ने प्रमुख वक्ता के रूप में विचार व्यक्त किए। मॉरीशस में भोजपुरी स्पीकिंग यूनियन की चेयरपर्सन डॉ. सरिता बुधू ने स्वागत किया। कला और संस्कृति विरासत के मंत्री अविनाश तिलक ने कहा कि यह महोत्सव हमारे पूर्वजों को श्रद्धांजलि है। महोत्सव का श्रेय मॉरीशस के प्रधानमंत्री, कला एवं संस्कृति विरासत मंत्री और डॉ. सरिता बुधू को दिया गया।



इस महोत्सव में मॉरीशस के विद्वानों के साथ-साथ इंग्लैंड से लोक सहदेव, फिजी से सुभाषिनी लता कुमार, सूरीनाम से श्रीमती लैला ललाराम, नाइजीरिया से हिमांशु त्रिपाठी, सिंगापुर से नीरज चतुर्वेदी, त्रिनिदाद से डॉ. भीषम, दक्षिण अफ्रीका से रामविलास, नीदरलैंड से राजमोहन, नेपाल से गोपाल ठाकुर और भारत से कवि मृत्युंजय कुमार सिंह आईपीएस, डॉ. संध्या सिन्हा, डॉ. राजीव कुमार सिंह, गायक राकेश श्रीवास्तव, प्रोफेसर प्रभाकर सिंह (बीएचयू), पत्रकार

स्वयं प्रकाश, डॉ. राजेश मांझी और डॉ. पीयूष रंजन झा प्रमुख वक्ता थे। पूर्व राज्यसभा सांसद आर० के० सिन्हा विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। प्रो० गुरुचरण सिंह, अशोक श्रीवास्तव, प्रदीप भोजपुरिया, हरेन्द्र सिंह, डॉ. उमाशंकर साहू, डॉ. राजेश मांझी, राम निवास यादव व अमेरिका से आए सुभाष जी आदि डेलीगेट्स ने भी

अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. नीतू कुमारी नूतन, मनीषा श्रीवास्तव, राकेश श्रीवास्तव, राजमोहन और मॉरीशस के गायकों ने लोकगीतों की शानदार प्रस्तुति दी। महोत्सव में अनेक प्रस्ताव पारित हुए। अगला भोजपुरी महोत्सव गोरखपुर व बनारस में करने की घोषणा हुई। प्रतिनिधि

मण्डल समूहों को अप्रवासी घाट, गंगा तालाब, रामायण सेंटर, समुंद्री तट व अनेक रमणीय स्थलों का दर्शन भी कराया गया। इस महोत्सव को भोजपुरी के लिए एक क्रांति के रूप में देखा गया।

उल्लेखनीय है कि 2019 में बनारस में प्रधानमंत्री प्रविंद कुमार जगन्नाथ ने इस महोत्सव के लिए घोषणा की थी जो कोविड की वजह से टलते-टलते 2024 में संभव हो पाया। पहली बार किसी देश की सरकार ने भोजपुरी महोत्सव का आयोजन किया। इस अवसर पर भोजपुरी भाषा की पुस्तक प्रदर्शनी में भारत-मॉरीशस के लेखकों की भोजपुरी पुस्तकों के साथ भोजपुरी जंक्शन पत्रिका के 30 से अधिक विशेषांक शामिल थे।



मालवा की मीरा मालती जोशी का महाप्रयाण

प्रसिद्ध कथाकार और पद्मश्री से सम्मानित मालती जोशी का 90 वर्ष की आयु में 15 मई 2024 को नई दिल्ली में निधन हो गया। मालती जोशी हिंदी और मराठी भाषा में अपने उत्कृष्ट सृजन के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्हें 2018 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया था। मालती जोशी का जन्म महाराष्ट्र के औरंगाबाद में हुआ था। उनका पालन-पोषण इंदौर में हुआ था। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा शहर के मालव कन्या विद्यालय से की तथा इंदौर के होल्कर कॉलेज से उच्च शिक्षा प्राप्त की। अपने लेखन के शुरुआती दौर में मालती जोशी कविताएँ भी लिखती थीं और कॉलेज में वह मालवा की मीरा के नाम से मशहूर थीं। आरंभ में सुप्रतिष्ठित पत्रिकाओं से रचनाएँ लौट आने पर उनके पति ने लिखते रहने हेतु अभिप्रेरित किया। मालती जोशी के प्रमुख कहानी संग्रहों में पाषाण युग, मध्यांतर, समर्पण का सुख, मन न हुए दस बीस और कहानियों में, एक घर हो सपनों का, विश्वास गाथा, आखिरी शर्त, मोरी रंग दे चुनरिया, एक सार्थक दिन आदि शामिल हैं। दादी की घड़ी,



जीने की राह, परीक्षा और पुरस्कार, स्नेह के स्वर, सच्चा सिंगार आदि बच्चों के कहानी संग्रह हैं। उन्होंने उपन्यास और आत्मकथाएँ भी लिखी हैं। उपन्यासों में पटाक्षेप, सहचारिणी, शोभा यात्रा, राग विराग आदि प्रमुख हैं। साथ ही उन्होंने एक गीत संग्रह मेरा छोटा सा अपनापन भी लिखा। उनके द्वारा 'इस प्यार को क्या नाम दूं?' नाम से एक संस्मरणात्मक आत्मकथा भी लिखा गया। मालती जोशी के साहित्य का मराठी, उर्दू, बंगाली, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, मलयालम और कन्नड़ जैसी अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है। उनके लेखन का रूसी, जापानी और अंग्रेजी जैसी विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ। उनकी कई कहानियाँ टेलीविजन के लिए रूपांतरित की गईं जिन्हें दूरदर्शन द्वारा प्रसारित किया गया। दूरदर्शन पर प्रसारित और

जया बच्चन द्वारा निर्मित "सात फेरे, धारावाहिक मालती जोशी की कहानी पर आधारित था। उनकी कहानी गुलज़ार द्वारा निर्मित टेलीविजन धारावाहिक 'किरदार' में भी दिखाई गई। मालती जोशी ने नई दिल्ली में अपने सुपुत्र और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव श्री सच्चिदानंद जोशी जी के निवास पर अंतिम साँस ली। मालती जोशी की साहित्य साधना से उनकी यशः एवं बेरक्त काया अमर रहेगी।

साहित्य का विश्व रंग 'प्रेम की वह बात'

विश्वरंग, साझा संसार हालैंड, वनमाली सृजनपीठ व प्रवासी भारतीय साहित्य शोध केंद्र भोपाल तथा 'साहित्य का विश्वरंग' द्वारा 'प्रेम की वह बात' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता रबीन्द्र नाथ टैगोर विश्वविद्यालय भोपाल के कुलाधिपति व विश्वरंग के निदेशक श्री संतोष चौबे द्वारा की गई। भारतीय ज्ञानपीठ के पूर्व निदेशक व विश्वरंग के सह निदेशक श्री लीलाधर मंडलोई की विशिष्ट उपस्थिति, अमेरिका से श्रीमती शशि पाधा व श्रीमती श्वेता सिन्हा, दुबई से सुश्री स्नेहा देव, दोहा कतर से श्रीमती शालिनी गर्ग व भारत से डॉ॰ प्रतापराव कदम ने भाग लिया। इस आयोजन का सफल संचालन अमेरिका से सुश्री विनीता तिवारी ने किया।

इस अवसर पर डॉ॰ संतोष जी ने विश्व रंग 2024 महोत्सव की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस वर्ष विश्व रंग महोत्सव का आयोजन विश्व हिंदी सचिवालय मॉरीशस और विश्व रंग के संयुक्त तत्वावधान में मॉरीशस में 7-9 अगस्त में किया जा रहा है। इस आयोजन में दुनियाँ भर से हिंदी के साहित्यकार भाग लेंगे। साझा संसार एवं 'साहित्य का विश्वरंग' आयोजन, गत पाँच वर्षों से वैविध्य के साथ गतिमान है। उन्होंने बताया कि प्रेम की परिभाषा बहुत व्यापक है। उन्होंने उर्दू और खासकर पंजाबी कहानियों में प्रेम के खुलेपन की बात कही। अब कहानियों में, युवा पीढ़ी में, खुलेपन के साथ प्रेम की अभिव्यक्ति हो रही है। युवा प्रेम में, बराबरी का रिश्ता और महिलाओं की उभरती ताकत के स्वर स्पष्ट सुनाई देते हैं।

श्री लीलाधर मंडलोई ने कहा कि साहित्य का विश्वरंग आयोजन, हालैंड से प्रकाशित अपनी त्रैमासिक पत्रिका के साथ, भौतिक व ऑनलाइन जगत में जगह बना चुका है। प्रवास की आवाज से रुबरु भारत-सीमा एक कालखण्ड में विस्तृत हो गई है। उन्होंने कहा कि प्रेम अपरिमित है, जमीं से आसमां तक है। हमें धरती, नदी, पहाड़, ग्रह, नक्षत्र, प्रकृति और आसमान की असीमता में ओत प्रोत प्रेम पर, अपने सृजन की रंज को बढ़ाना चाहिए। 'प्रेम की वह बात' थीम के अन्तर्गत शशि पाधा ने कहा कि प्रेम सर्वव्यापी है। प्रेम ऐसी कोमल अनुभूति है इसे जितना बाँटें उतना ही बढ़ता है। उन्होंने अपने प्रवासी जीवन की चर्चा करते हुए कहा कि मुझसे बिंदी नहीं छूटी। नये परिवेश में, नयी सीमाओं से जुड़ने के लिए नई रणनीति चाहिए।

श्वेता सिन्हा ने प्रवास के अपने नितान्त वैयक्तिक शुरुआती अनुभवों-बर्फ की अट्टारह इंच मोटी चादर, अपने पति के हाथ में हाथ की बात, कनाडा के हेल्थ सिस्टम और पड़ोसी कोरियन लेडी की आत्मीयता के बारे में बताया। शालिनी गर्ग ने कहा कि प्रवास काल का आरम्भिक अनुभव एक अजीब सा अहसास है। जहाँ अजनबी सी शांति है और सुकून भी। उन्होंने अपने अकेलेपन से लेकर हिंदी भाषा के प्रति पनपे प्रेम, हिंदी सीखने और स्कूल में हिंदी पढ़ाने तक की यात्रा पर विस्तार से बताया। डॉ॰ प्रतापराव कदम ने 'पारु की स्मृति में' शीर्षक से रचना पाठ किया। यह ऐतिहासिक रचना, अजन्ता- एलोरा की पृष्ठभूमि में, रॉबर्ट गिल और पारु की सदियों पुरानी, अद्भुत प्रेम की कहानी है।

स्नेहा देव ने अपने दुबई प्रेम के बारे में बताया कि यहाँ के नियम कानून अकाट्य हैं और आपसी सौहार्द अनुकरणीय है। उन्होंने कहा कि मनुष्य इच्छाधारी जीव है और आज की दुबई को बनाने में भारतीयों का अतुलनीय योगदान है। जीवन में एक स्तर पर आकर प्रेम वैश्विक हो जाता है। साझा संसार के अध्यक्ष रामा तक्षक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

लोकतंत्र की ज़िम्मेदारी



भारत लोकतंत्र की परीक्षा से निकल रहा है।

घोषणा पत्र, मुद्दे, रैलियाँ, रोड शो, सोशल मीडिया। पूरा समाज जैसे बेहतर भारत के लिए अपनी प्राथमिकताएँ और दिशा तय कर रहा है, नुककड़ पर, चाय की दुकान से लेकर पाँच सितारा होटल तक। परंतु दुर्भाग्य यह है कि ऐसी मुँह जुबानी भागीदारी के बावजूद भी मतदान का प्रतिशत गिरा है। देश का बौद्धिक और आम नागरिक शायद अपनी ज़िम्मेदारी से न्याय नहीं कर पाया।

मेरी कविता की कुछ पंक्तियाँ हैं :-

सरकार बनाता एक वोट

सरकार गिराता एक वोट

गाँधी की अमानत एक वोट

सदियों की चाहत एक वोट

जन गण मन है एक वोट

भारत का मन है एक वोट

इसे समझना और आत्मसात करना होगा।

आइए विकसित और यशस्वी भारत के इस स्वप्न को गति देने के लिये अपने इस महत्वपूर्ण दायित्व को निभाएँ।

अनिल शर्मा 'जोशी'

अध्यक्ष, वैश्विक हिन्दी परिवार

विशिष्ट सहयोग



डॉ. संतोष मिश्र डॉ. आलोक कुमार डॉ. जयशंकर यादव डॉ. राजेश गौतम

आपकी प्रतिक्रिया

उत्तम प्रयास। पत्रिका का सम्यक अवलोकन करने पर विश्वास पूर्वक कहा जा सकता है कि यह पत्रिका विश्व भर में चल रही हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य से जुड़ी गतिविधियों का आईना बनकर हिंदी के वैश्विक परिदृश्य से निरन्तर परिचित कराती रहेगी। अनंत शुभकामनाएँ

-प्रो. कुमुद शर्मा, उपाध्यक्ष, साहित्य अकादमी

यह पत्रिका हिन्दी भाषा और संस्कृति के समृद्ध विचारों और विविधताओं को समर्पित है। इसमें साहित्य, कला, और समाज के महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहन लेखन मिलता है। यह न केवल ज्ञानवर्धक है बल्कि पाठकों को सोचने पर भी मजबूर करता है। पत्रिका की भाषा शैली सहज और प्रभावशाली है जो हिन्दी प्रेमियों को जोड़ने में सफल होगी।

-प्रो. ऋचा चौधरी, दिल्ली विश्वविद्यालय

वैश्विक हिंदी पत्रिका का पाँचवाँ अंक पढ़ने को मिला। वैश्विक स्तर पर, विविध आयोजनों की समग्र जानकारी साझा करता ऐसा अंक, समय की मांग है। हिंदी भाषा एवं भारतीय साहित्य को समृद्ध करने की दिशा में यह एक ठोस कदम है। साथ ही वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा में हो रहे सृजन और गतिविधियों को भारतीय पाठकों के समक्ष लाने का यह भागीरथी प्रयास सराहनीय एवं स्वागत योग्य है। सम्पादक मंडल को शुभकामनाएँ एवं बधाई।

-रामा तक्षक, नीदरलैंड

संपादकीय वाक्य “ उधार की पूँजी से व्यापार चल सकता है किन्तु उधार के ज्ञान से किसी को संतुष्ट नहीं किया जा सकता। “ इस वाक्य ने बहुत प्रभावित किया। वैश्विक हिन्दी मंचो की उत्तम रिपोर्टिंग ज्ञानवर्धक है। मॉरीशस से अभिमन्यु अनंत की कविता ने अमित छाप छोड़ी है। अगले अंक की प्रतीक्षा है।

-संतोष कुमार मिश्र, पूर्व निदेशक,

स्वमिविवेकानंद भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, सूवा, फीजी

यह पत्रिका कागज पर नहीं है किन्तु विषयवस्तु एवं लेखकीय दृष्टि से कागजी पत्रिकाओं से भी बढ़कर है। हिंदी संसार को भौगोलिक संसार के भू- पृष्ठ पर स्थापित करने एवं देखने की प्रबल आकांक्षा पत्रिका के उच्च लक्ष्य को रेखांकित करती है। 'विश्व परिक्रमा' शीर्षक से देश और दुनियाँ के विभिन्न स्थलों पर हिंदी के स्पंदन का सचित्र दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। 'समग्रतः पत्रिका का भविष्य निरापद है। पूर्ण आशा है कि यह पत्रिका अपने लक्ष्य को प्राप्त करेगी। शुभकामनाओं सहित।

- हेमन्त कुमार शुक्ल

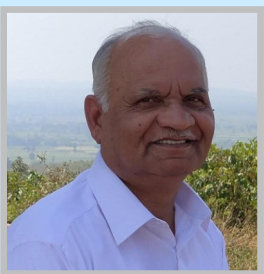
प्रवक्ता, राजकीय आश्रम पद्धति विद्यालय, सहारनपुर

डायस्पोरा रिसर्च एंड रिसोर्स सेंटर का प्रवासियों से संवाद

रह रहे भारतीय समुदाय के साथ संवाद स्थापित कर उनकी संस्कृति, राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों को समझने के साथ-साथ भारत और प्रवासियों के बीच मजबूत संबंध बनाना है। इस दिशा में सेंटर, विभिन्न देशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के साथ संवाद की श्रृंखला चला रहा है। इस श्रृंखला के अंतर्गत 24वां एपिसोड 16 मई 2024 को प्रवासी भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर गयाना के प्रतिष्ठित राजनेता और संस्कृतिकर्मी पंडित रवीन्द्रनाथ प्रसाद से संवाद किया गया। उनके साथ श्रीमती देवन्ती महाराज और गुयाना दूतावास के राजनयिक श्री केशव तिवारी भी उपस्थित रहे। इस संवाद में भारत-गुयाना के ऐतिहासिक संबंधों के साथ-साथ धार्मिक, सांस्कृतिक, कृषि, शिक्षा, राजनीति और व्यापार जैसे द्विपक्षीय मुद्दों पर गहन चर्चा हुई। पंडित रवीन्द्रनाथ प्रसाद ने बताया कि गुयाना में भारतीय संस्कृति अत्यंत सहज और प्रभावी रूप से पल्लवित और पुष्पित हो रही है। उन्होंने गुयाना में हिन्दू त्योहारों व मंदिरों में भजन – गायन के अतिरिक्त तेजी से विकसित हो रही आर्थिक गतिविधि पर प्रकाश डाला और बताया कि गुयाना में पेट्रोलियम की खोज के कारण यह विश्व की अत्यंत समृद्ध आर्थिक व्यवस्था हो गई है।

कार्यक्रम का संचालन दिल्ली स्थित अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् के सचिव प्रो॰ गोपाल अरोड़ा द्वारा किया गया। स्वागत उद्बोधन और वक्ताओं का परिचय पूर्व राजदूत आर. दयाकर ने कराया। कार्यक्रम का समापन वक्तव्य और धन्यवाद प्रस्ताव श्री नारायण कुमार, मानद निदेशक, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद् ने प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष एवं आभासी माध्यम से परिषद के सदस्य, शिक्षाविद, विद्यार्थी और पत्रकारों आदि ने गरिमा बढ़ाई।

संपादक की कलम से...



सृष्टि ने मनुष्य में प्रेम और आनंद की अनुभूतियों के पुष्प खिलाये हैं। मन और आत्मा को संतुष्ट करने का खजाना प्रकृति के विराट प्रांगण में दिये हैं। कहना न होगा कि हम सब मनुष्यता के धागे से जुड़े हुए हैं। विद्या समूची मानवता की पूँजी होती है।

ज्ञानीजन हमेशा गुणीजनों से विद्या ग्रहण करते हैं। इसमें भाषा की अहम भूमिका होती है। महान व्यक्तित्व के स्वामियों ने अपने विरोधियों को भी ज्ञान दिया। मानव धर्म मनुष्यता के साथ धड़कने और विभिन्न भाषाओं में एक होने का गीत गाता है। अतएव हमें अपने भाषायी लक्ष्य का बोध रहे ताकि तबाहियों से भाषाएँ बची रहें।

युवा लोग ऊर्जा और उत्साह से भरे होते हैं और बुजुर्गों के पास अनुभव का खजाना होता है। नई पीढ़ी को सींचना पुरानी पीढ़ी का कर्तव्य है। अतएव बुजुर्ग और ज्ञानीजन भाषाई एलाम बजाते रहें और नई पीढ़ी को जगाते हुए ज्ञान का हस्तांतरण करते रहें। हमें बुनियादी बदलावों को भी स्वीकार कर चलना होगा। इस पत्रिका के पिछले अंकों के संबंध में हमें सराहना के स्वर सुनने के लिए मिले हैं। इस अंक में भी सामूहिक सत प्रयत्न से तदनुसार राष्ट्रीय - अंतरराष्ट्रीय प्रमुख हिन्दी कार्यक्रम समाचार, साक्षात्कार, पुस्तक समीक्षा और ज्ञानवर्धक विविधा समाहित है। आइये, विरासत और विकास सहित भाषाई प्रचार - प्रसार को समुचित गति दें और अस्मिता कायम रखें। सुझावों का स्वागत है।

-डॉ. जयशंकर यादव

वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा आयोजित रविवारीय कार्यक्रम

(विश्व हिंदी सचिवालय, अंतरराष्ट्रीय सहयोग परिषद, वातायन, भारतीय भाषा मंच और केंद्रीय हिंदी संस्थान के तत्वावधान में)

(रिपोर्ट लेखन - डॉ. जयशंकर यादव)

प्रवासी कहानी संग्रह : परिचर्चा (5 मई 2024)



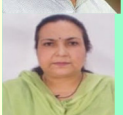
वैश्विक हिंदी परिवार द्वारा 5 मई 2024 को इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय दिल्ली के प्रो. जितेंद्र श्रीवास्तव की अध्यक्षता में “प्रवासी कथा संग्रह, विषय पर परिचर्चा” आयोजित हुई। इसमें अमेरिका की कहानीकार डॉ. अनिल प्रभा कुमार के संग्रह (कथा सप्तक) और



कनाडा की डॉ. शैलेजा सक्सेना की प्रवासी कथाकार शृंखला की (लेबनान की एक रात) विशेष रूप से सम्मिलित थीं। समालोचक श्रीयुत श्रीवास्तव ने कहा कि ये कहानियाँ स्मृतिजीविता के यथार्थ पर परिधि और घनत्व बढ़ाने वाली हैं। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा के प्रो. उमेश कुमार सिंह का कहना था कि ये कहानियाँ सत्य के ठोस धरातल पर परिपक्वता से संपूरित हैं। लेखक संपादक मनोज मोक्षेन्द्र का मानना था कि ये कहानियाँ बिना बनावटीपन और बिना किसी हड़बड़ी के लिखी गई हैं। कथा सप्तक के संपादक श्री आकाश माथुर का मन्तव्य था कि विडम्बना की पहचान में दक्षता के साथ कहानियों का चयन बहुत महत्वपूर्ण है। ये प्रवासी साहित्य की थाती हैं।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष एवं प्रवासी साहित्य मर्मज्ञ श्री अनिल जोशी ने प्रवासी साहित्यकारों की प्रभावशाली साहित्य साधना की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन कहानियों के द्वंद में भाषिक और सांस्कृतिक मन छिपा है। इनकी भाषा में संवेदनात्मक संव्यवहार और आद्योपांत कथारस है। लेखिका अलका सिन्हा ने कहा कि जिस जमीन को प्रवासी छोड़कर जाते हैं और जहाँ रहते हैं वहाँ का द्वंद कहानियों में झलकना स्वाभाविक है। आरम्भ में श्रीमती अलका सिन्हा द्वारा आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया गया। सिंगापुर से वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखिका श्रीमती आराधना झा श्रीवास्तव ने बखूबी संचालन किया। संबन्धित साहित्यकारों ने भी अपना मन्तव्य और अनुभवजन्यता बताई। उन्होंने कहा कि प्रवासी लेखन में अपार संभावनाएँ हैं। शिक्षण संस्थाओं को भी समुचित पहल करनी चाहिए। सरकारी तौर पर भी प्रवासी साहित्य को बढ़ावा देना श्रेयस्कर होगा। तकनीकी सहयोग का दायित्व कृष्णा कुमार द्वारा संयत भाव से संभाला गया। समूचा कार्यक्रम श्री अनिल जोशी के मार्गदर्शन में संचालित हुआ। ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर द्वारा कार्यक्रम प्रमुख की भूमिका का सफल निर्वहन किया गया। अंत में आत्मीयता से धन्यवाद ज्ञापन किया गया। यह कार्यक्रम “वैश्विक हिन्दी परिवार शीर्षक से “यू ट्यूब , पर उपलब्ध है।

कश्मीर में हिंदी (26 मई 2024)



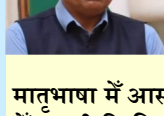
प्रख्यात कश्मीरी कवि डॉ. सतीश विमल की अध्यक्षता में “कश्मीर में हिन्दी, विषयक व्याख्यान आयोजित हुआ। इस अवसर पर वितस्ता विमर्श ई पत्रिका का विधिवत लोकार्पण भी हुआ। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री विमल जी ने कहा कि बहुभाषी कश्मीर लगभग पाँच हजार वर्षों से ज्ञान केंद्र रहा है। यहाँ शारदापीठम की विशेष भूमिका रही है। बेशक यहाँ देवनागरी की कठिनाई है किन्तु आम आदमी कठिन हिन्दी भी समझता है। साजिशों की वजह से शांति भंग हुई थी किन्तु विध्वंस अधिक समय नहीं टिकता। यहाँ की सभी भाषाओं पर कार्यक्रम होते रहने चाहिए। प्रख्यात सामाजिक कार्यकर्ता श्री इंद्रेश कुमार ने इस आयोजन पर हर्ष प्रकट करते हुए कहा कि अपनी भाषा का सम्मान होना चाहिए और प्रत्येक भाषा का सम्मान होना चाहिए। जननी जन्म भूमिश्च, स्वर्गादपि गरीयसी, चरितार्थ होना चाहिए। वर्ष 1983 के बाद कश्मीर के लगभग 800 गांवों का दौरा करने एवं विपरीत हालातों को सन्निकट से देखने की अनुभवजन्यता से उन्होंने कहा कि यहाँ आम आदमी शांतिप्रिय है। मोहब्बत के पैगाम से गलतफहमियाँ दूर होंगी। सब हमारे थे, हैं और रहेंगे और हम कामयाब होंगे। कश्मीर भारत का स्वर्ग है और भारत दुनियाँ का स्वर्ग है। इस अवसर पर दुनियाँ के विभिन्न देशों के विद्वान, चिंतक, प्राध्यापक, शोधार्थी और भाषा प्रेमी आदि जुड़े थे।

आरम्भ में साहित्यकार श्रीमती अलका सिन्हा द्वारा आत्मीयतापूर्ण स्वागत किया गया। इसके बाद लेखक डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट द्वारा सधे शब्दों में शालीन ढंग से संचालन का दायित्व संभाला गया। केंद्रीय कश्मीर विश्वविद्यालय की हिन्दी अधिकारी डॉ. सकीना अख्तर ने कहा कि कश्मीर में भाषाई सौहार्द के साथ हिन्दी की स्थिति आशाजनक है किन्तु संतोषजनक नहीं है। विश्वविद्यालय के सैकड़ों कार्मिकों के सेवाकालीन हिन्दी प्रशिक्षण हेतु प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ और पारंगत की कक्षाएँ चलाई गईं एवं भारत सरकार के प्रावधानों के अनुसार राजकीय प्रयोजनों हेतु हिन्दी का भरसक प्रयोग किया गया। यहाँ केंद्रीय सरकार के सैकड़ों कार्यालयों में हिन्दी में रोजगार की अपार संभावनाएँ हैं। हिन्दी प्राध्यापिका डॉ. मुक्ति शर्मा ने कहा कि प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर के 47 महाविद्यालयों में स्थानीय भाषाओं के साथ प्रोत्साहन सहित विधिवत हिन्दी की पढ़ाई आवश्यक है। यहाँ बच्चे विश्व के ऑनलाइन कार्यक्रमों से जुड़कर बहुत ही प्रसन्न होते हैं।

वितस्ता ई पत्रिका की सह संपादक डॉ. अमृता सिंह का मानना था कि साहित्य और पत्रकारिता एक ही सिक्के के पहलू हैं जो सत्य की खोज करते हैं। कश्मीर में महाराजा रणजीत सिंह के समय में 1867 से पत्रकारिता सुदृढ़ हुई और कालांतर में साधकों द्वारा बढ़ाई गई। पहले बंद हो चुकी वितस्ता पत्रिका को पुनः शुरू कर हम सब आह्लादित हैं। पत्रिका के संपादक डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट ने पी पी टी के माध्यम से इसके सभी खंडों-वैचारिक, इतिहास विरासत, विमर्श, साक्षात्कार, काव्य एवं कश्मीरी वितस्ता आदि की सचित्र जानकारी दी। जापान से पद्मश्री डॉ. तोमियो मिजोकामी ने प्रसन्नता से कश्मीरी सीखने का सुखद अनुभव सुनाया। भारतीय भाषा मंच के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. राजेश्वर कुमार ने कहा कि कश्मीर, भारत की उच्च ज्ञान परंपरा और संस्कृताचार्यों की भूमि रही है। इसकी उत्तराधिकारिणी हिन्दी होने के बावजूद कश्मीर में उर्दू थोप दी गई। आम अवाग के जेहन में हिन्दी की स्वीकार्यता है। यहाँ की स्थानीय भाषाओं कश्मीरी, डोगरी, लद्दाखी और गूजरी आदि को समुचित स्थान मिलना चाहिए। देवनागरी का प्रचलन बढ़ाना चाहिए। सामूहिक प्रयास और तारतम्य से हिन्दी संवाहिका बने। कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर में हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ. रूबी जुत्सी ने कहा कि कश्मीर में भक्ति काल में हिन्दी सुदृढ़ हुई। उन्होंने कश्मीर के साहित्यकारों के योगदान को क्रमबद्ध रूप से रेखांकित करते हुए हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने की वकालत की।

वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने सभी वक्ताओं विशेषकर इंद्रेश कुमार जी का सादर समादर करते हुए कवितामय अंदाज में कहा कि भाषा दीवार तोड़ती है। मैं नहीं चाहता कि एक और दीवार बन जाए। आज का समय भाषा के समन्वय का समय है। हमारी मूल संस्कृति और कश्मीरी सोच को आगे बढ़ाने में हिन्दी बहुत कारगर सिद्ध हो सकती है। वितस्ता पत्रिका से जुड़े सभी महानुभावों को हार्दिक शुभाशंसा देते हुए उन्होंने तकनीकी के सहारे इसे विश्व भर में फैलाने और कश्मीर के अन्य शहरों से भी पत्रिकाएँ निकालने की सलाह दी। शालीन समन्वयन का कार्य श्री अनिल जोशी, कार्यक्रम प्रमुख ब्रिटेन से दिव्या माथुर और तकनीकी सहयोग का दायित्व कृष्णा कुमार द्वारा बखूबी संभाला गया। अंत में भारत से लेखक डॉ. वेंकटेश्वर राव द्वारा धन्यवाद दिया गया। यह कार्यक्रम “यू ट्यूब , पर उपलब्ध है।

भारतीय भाषाओं का बदलता परिदृश्य (12 मई 2024)



कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए भारत सरकार के राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद के अध्यक्ष श्री निर्मल जीत सिंह कलसी ने कहा कि भारत की भाषायी अस्मिता को कायम रखने के लिए नई शिक्षा नीति लागू होने के बाद आमूल परिवर्तन हुए और तकनीकी शिक्षा में भारतीय भाषाओं को विधिवत प्रविष्टि मिली तथा बहुत सी भ्रामक दीवारें टूटी हैं। हम सभी को भारतीय भाषाओं को लागू करने के लिए पुरजोर वकालत करनी चाहिए। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार, विद्वान-विदुषी, प्राध्यापक, शोधार्थी, प्रतियोगी परीक्षार्थी और भाषा प्रेमी आदि सैकड़ों की संख्या में जुड़कर लाभान्वित हुए।

आरम्भ में साहित्यकार डॉ. बरुण कुमार द्वारा स्वागत किया गया। राष्ट्रीय सिन्धी भाषा संवर्धन परिषद के निदेशक प्रो. रवि टेकचंदानी द्वारा संचालन संभाला गया। उन्होंने आई आई टी जोधपुर में हाल ही निदेशक का दायित्व संभालने वाले प्रो. अविनाश अग्रवाल का अभिनंदन करने हेतु अध्यक्ष श्री कलसी जी और वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी को आमंत्रित किया। मौके पर इन दोनों महानुभावों द्वारा प्रो. अग्रवाल की सेवा साधना का सादर समादर करते हुए सबकी ओर से अभिनंदन किया गया।

राजीव गाँधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भोपाल की प्रो. सविता व्यास ने कहा कि हमने इंजीनियरिंग की पुस्तकों के अनुवाद हेतु विधिवत व्यापक योजना बनाई एवं अल्पावधि में पूरा किया। मुख्य वक्ता के रूप में अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के सदस्य सचिव प्रो. राजीव कुमार ने कहा कि आत्मा से जुड़े इस विषय पर गहन चिंतन के बाद भारतीय भाषाओं को लागू करने हेतु एआईसीटीई द्वारा चरणबद्ध तरीके से सैकड़ों पुस्तकों का अनुवाद कर और प्राध्यापकों को प्रशिक्षण देकर सतत निगरानी के साथ कार्यान्वित किया गया और प्रधानमंत्री जी की सदिच्छा को पूरा किया गया।

अभिनंदन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रो. अविनाश अग्रवाल ने कहा कि भाषाएँ जीवन का आधार होती हैं और तकनीकी शिक्षा में ज्ञान की विशेष महत्ता है जो मातृभाषा में आसानी से समझ में आता है। अतएव व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाते हुए 12 भारतीय भाषाओं में तकनीकी शिक्षा प्रदान करने की वृहद योजना बनाकर लागू हुई। ई-कुंभ पोर्टल पर पुस्तकें निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं हैं जिन्हें लगभग 5 लाख विद्यार्थियों ने डाउनलोड किया है। ग्रामीण परिवेश के अधिकाधिक विद्यार्थी लाभान्वित हुए हैं। सान्निध्य प्रदाता श्री अनिल जोशी ने कहा कि हमें भाषाओं की अस्मिता को कायम रखने हेतु कटिबद्ध रहना होगा। शिक्षा मंत्रालय व एआईसीटीई में हिन्दी और भारतीय भाषाओं को लागू करने संबंधी हर चरण मेरी आँखों से गुजरा है और सदस्य रूप में सहभागिता से सेवा का सुअवसर मिला है। यह क्रांतिकारी कदम है जिसका आगामी समय में आशातीत परिणाम आयेगा।

विमर्श में भाग लेते हुए श्री मोहन बहुगुणा ने रोजगारोन्मुख शिक्षा, मिहिर मिश्र ने हिन्दी और भारतीय भाषाओं की पढ़ाई, जवाहर कर्नावट ने अनुवाद की श्रद्धा और प्रो. जगन्नाथन ने मानकता संबंधी सवाल उठाए जिनका वक्ताओं द्वारा बेबाक विश्लेषण सहित संतोषजनक उत्तर दिया गया। यूक्रेन से प्रो. युरी ने भारत की बहुभाषिकता को कायम रखने तथा जापान से जुड़े पद्मश्री प्रो. तोमियो मिजोकामी ने भारतीय भाषाओं की तकनीकी अनुवाद से समृद्धि संबंधी चर्चा की। समापन भाषण में प्रो. निर्मल जीत कलसी ने कहा कि तकनीकी क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के लिए व्यापक नीति, प्रचुर सामग्री, प्रशिक्षण, भाषा अनुसंधान, प्रयोगशालाएँ, छात्रवृत्ति, प्रोत्साहन, अंतर अनुशासनिक कार्य, मीडिया की सशक्त भूमिका, औद्योगिक साझेदारी, उत्सवों का आयोजन, सतत मूल्यांकन, अलग प्रवेश प्रक्रिया, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, समावेशी जागरूकता तथा समरसता और भाषाई प्रेम निहायत जरूरी है। इसके लिए सामूहिक सत प्रयत्न जारी रहना चाहिए।

समूचे कार्यक्रम का बखूबी समन्वयन श्री अनिल जोशी ने किया। कार्यक्रम प्रमुख की भूमिका ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर जै की रही। भारत से डॉ. जयशंकर यादव के आत्मीय कृतज्ञता ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यह कार्यक्रम “वैश्विक हिन्दी परिवार, शीर्षक के अंतर्गत “यू ट्यूब , पर उपलब्ध है।

शोध के संबंध में व्यवहारिक जानकारी (19 मई 2024)



शोध के संबंध में व्यवहारिक जानकारी, देने हेतु विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता करते हुए स्वीडन के उपसाला विश्वविद्यालय के प्रो. हाइंस वरनर वेसलर ने कहा कि शोध लेखन में प्रेरणा के साथ मन और आत्मा से काम होना चाहिए। बेशक पूर्व और पश्चिम के आलोचकों के दृष्टिकोण स्वाभाविक रूप से अलग हैं किन्तु शोध छात्र गहन अध्ययन सहित खुद सोचें और मौलिकता बताएँ। भारत में नई शिक्षा नीति के बाद शोध को नई दिशाएँ मिली हैं। इस अवसर पर अनेक देशों के साहित्यकार, विद्वान-विदुषी, प्राध्यापक, शोधार्थी, प्रतियोगी परीक्षार्थी और भाषा प्रेमी आदि सैकड़ों की संख्या में जुड़कर लाभान्वित हुए।

आरम्भ में यू. के. के बर्मिंघम से डॉ. वंदना मुकेश द्वारा “जिन खोजा तिन पाइयाँ, की भूमिका सहित स्वागत किया गया। तत्पश्चात् पुर्तगाल के लिस्बन विश्वविद्यालय से हिन्दी प्राध्यापक डॉ. शिव कुमार सिंह द्वारा संचालन संभाला गया। तदोपरांत दिल्ली विश्वविद्यालय के गार्गी कालेज की प्रो. स्वाति श्वेता द्वारा शोध पत्र लिखने के विविध आयामों पर रंगीन प्रभावी पीपीटी की व्याख्या सहित प्रस्तुति दी गई। उन्होंने समझाया कि अब तक उदघाटित न हुए को उद्घाटित करना शोध की पहली शर्त है। शोध की वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक मुख्यतया तीन प्रविधियाँ और एक-ज्ञानानुशात्मक और अंतर ज्ञानुशात्मक दो प्रकार हैं। शोध पत्र की प्रक्रिया में विषय का चयन, शीर्षकीकरण, रूपरेखा निर्माण, सारांश, कुंजी शब्द, प्रस्तावना, साहित्य का पुनरावलोकन, निष्कर्ष और संदर्भ सूची का विशेष महत्व है। इसमें मौलिकता, सत्यवादिता और आत्म संयम आदि भी अनिवार्य हैं। हमें साहित्यिक चोरी से बचते हुए डेटा संग्रहण और मौलिक लेखन करना चाहिए।

नॉर्थ कैरोलीना के ड्यूक यूनिवर्सिटी की हिन्दी प्राध्यापिका डॉ. कुसुम नैपसिक ने सुझाव दिया कि शोधार्थियों को बिना किसी तनाव के नियमित समय-सारणी सहित, गहन अध्ययन के साथ-साथ बगैर टाल-मटोल के शांत चित्त से लेखन कार्य भी करना चाहिए। दिल्ली विश्वविद्यालय की प्रो. रेखा सेठी ने उद्धरणों के संबंध में मार्ग प्रशस्त किया। मेरठ विश्वविद्यालय की शोधार्थी पूजा यादव और नीलम के प्रविधि और शीर्षकीकरण संबंधी सवाल का समाधान किया गया। श्री अनिल जोशी ने सदाशयी संयोजन किया। कार्यक्रम प्रमुख ब्रिटेन से साहित्यकार दिव्या माथुर थीं। भारत से पूर्वा सिंह के आत्मीय धन्यवाद ज्ञापित किया। यह कार्यक्रम “वैश्विक हिन्दी परिवार, शीर्षक के अंतर्गत “यू ट्यूब , पर उपलब्ध है।

दिव्या माथुर का अमृत महोत्सव



वैश्विक हिंदी परिवार और 'वातायन-यूके' के तत्वावधान में 22 मई 2024 को प्रख्यात प्रवासी साहित्यकार सुश्री दिव्या माथुर के पचहत्तरवें जन्म-दिन पर लंदन में एक संगोष्ठी आयोजित की गई जो स्वयं में ऐतिहासिक थी। सुश्री दिव्या माथुर के जन्म-दिन को उत्सवित करने वाली इस अमृत महोत्सव के ऑनलाइन मंच पर देश-विदेश की नामचीन हस्तियां, साहित्यकार, संस्कृतिकर्मी और दिव्या माथुर के चहेते उपस्थित थे।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थीं-विख्यात साहित्यकार सुश्री ममता कालिया और प्रतिष्ठित कवयित्री सुश्री अनामिका। इसे अविस्मरणीय बनाने के लिए प्रसिद्ध कवयित्री और मंच संचालक सुश्री अलका सिन्हा ने दिव्या जी की कहानी 'वर्ष 2050' के एक अंश का वाचन किया। डॉ. राजेश कुमार ने उनकी एक व्यंग्य-रचना का पाठ किया। सुप्रसिद्ध प्रवासी कथाकार डॉ. शैलजा सक्सेना ने उनकी चंद कविताओं की सुमधुर प्रस्तुति दी तथा सुश्री पूनम देव ने एक गायन पेश किया। इस कार्यक्रम को सुश्री आराधना झा श्रीवास्तव के सुविज्ञ संचालन में प्रख्यात प्रवासी साहित्य मर्मज्ञ साहित्यकार तथा वैश्विक हिन्दी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल शर्मा जोशी का सान्निध्य मिला। सुप्रतिष्ठित प्रवासी कवि डॉ. पद्मेश गुप्त का प्रवासी साहित्यकार मीरा कौशिक एम.बी.ई. एवं सुश्री सुनीता पाहुजा द्वारा इस विशेष कार्यक्रम का संयोजन किया गया। कई स्तरों पर कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सहयोगी कार्यकर्ता थे- सुश्री वंदना मुकेश, सुश्री आस्था देव, डॉ. मधु चतुर्वेदी, डॉ. जयशंकर यादव, डॉ. वरुण कुमार, सुश्री शिवि श्रीवास्तव आदि।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए श्री पद्मेश गुप्त ने संक्षेप में सुश्री दिव्या जी के व्यक्तित्व और

कृतित्व पर प्रकाश डाला तथा उन्हें उनके जन्म-दिन पर अशेष बधाइयां देते हुए उनकी भावी साहित्यिक यात्रा के लिए कामना की। इस अवसर पर, लोगों द्वारा भेजे गए बधाई संदेशों के ऑडियो-वीडियो की ऑनलाइन प्रस्तुतियां दी गईं जिनके प्रस्तोता थे-प्रो. अनामिका, डॉ. यूरी बोत्वीकिन, श्री तोमिओ मिजोकामी, नासिरा शर्मा, सच्चिदानंद जोशी, ल्यूदमिला खोखोलोवा, हाइंस वर्नर, सूर्यबाला, तात्याना, मौना कौशिक, मनीषा कुलश्रेष्ठ, संध्या सिंह, आस्था देव, पॉल फ़्लादर, अर्चना पैनयूली, योगेश पटेल तथा तितिक्षा शाह आदि। इन सभी ने दिव्या माथुर के साथ अपने अंतरंग संबंधों की चर्चा करते हुए उनकी दीर्घायु होने तथा उनकी लेखनी के सतत चलने रहने की कामना की। सुश्री दिव्या माथुर के रचनाकर्म, कृतित्व और व्यक्तित्व तथा उनके साथ अपने-अपने संबंधों पर उदगार प्रकट करने वालों में डॉ. ममता कालिया, डॉ. प्रेम जनमेजय, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र, डॉ. जयशंकर यादव, डॉ. सुधा सिंह, प्रो. आलोक गुप्ता, जय वर्मा, वेंकटेश्वर राव वनमा, डॉ. मुन्नालाल गुप्ता, आशा मोर, डॉ. मोहन बहुगुणा, जीत सिंह, डॉ. ऋतु शर्मा, अरुणा अजितसरिया, सुनीता पाहुजा, चंद्र मणि, अनूप भार्गव, भारती सिंह, पूनम माटिया आदि प्रमुख थे। मंच पर उपस्थित अधिकांश दर्शक-श्रोता, दिव्या माथुर जी की शतायु की कामना करने के साथ-साथ उनकी अनेक प्रतिनिधि कविताओं की पंक्तियों का वाचन भी करते रहे। कार्यक्रम के समापन पर श्री अनिल शर्मा जोशी जी ने कहा कि दिव्या जी का साहित्य प्रवासी रचनाकारों में सबसे अधिक चर्चित हैं और सबसे ज़्यादा पढ़ा जाता है। उन्होंने कहा कि दिव्या जी पचहत्तर वर्ष की होकर भी आज हमारा नेतृत्व कर रही हैं। बकौल प्रो. अनामिका, दिव्या जी कोई साधारण लेखिका नहीं हैं। उन्होंने हर विधा में रचनाएं की हैं और सुदीर्घ उपन्यास लिखकर हम सभी को आश्चर्य में डाल दिया है। उनकी रचनाधर्मिता और साहित्य की गुणवत्ता उन्हें असाधारण बनाती हैं। कार्यक्रम के आखिर में सुश्री सुनीता श्रीवास्तव ने कहा कि दिव्या जी न केवल एक साधारण लेखिका हैं बल्कि एक महान शख्सियत भी हैं। सुनीता जी ने अनिल शर्मा जी के प्रति आभार प्रकट किया कि उन्होंने इतने महत्वपूर्ण कार्यक्रम की संकल्पना की और उसे साकार स्वरूप प्रदान किया।

(प्रेस रिपोर्ट-डॉ. मनोज मोक्षेन्द्र)

स्पेन का परीलोक बार्सिलोना :

ले डेमोइजेल्स ड 'अविग्नॉन' या 'द यंग विमेन ऑफ़ अविग्नॉन'



वैसे तो महान चित्रकार पाब्लो पिकासो मलागा में पैदा हुए पर उनकी कला का जन्म बार्सिलोना में हुआ था। मेरे गाइड ने पिकासो के बारे में बहुत सारी रोचक जानकारी दी। पिकासो 1881 में स्पेन के मालागा में पैदा हुए थे। बाद में वे अपने परिवार के साथ 1895 में बार्सिलोना में रहने के लिए आये तो यही के होकर रह गये। पिकासो ने सैन जॉर्ज के रॉयल फाइन आर्ट्स एकेडमी में पढ़ाई की। बार्सिलोना में उनके समय के दौरान, पिकासो की कला शैली में बहुत परिवर्तन हुआ और उन्होंने कला की नयी-नयी तकनीकों और विषयों पर प्रयोग करना शुरू किया। इस शहर के जीवंत सांस्कृतिक वातावरण के साथ-साथ, कैटलोनिया की विशिष्ट कला परंपराओं ने भी उनकी कला के निर्माण में मुख्य भूमिका निभायी।

पिकासो के कॉलेज के पास अविग्नॉन स्ट्रीट पर एक रेड लाइट एरिया था। उनकी मानवीय संवेदना ऐसी थी कि उनकी दोस्ती इस रेड लाइट एरिया में काम करने वाली कुछ लड़कियों से हुई। पिकासो ने उनकी वेदना को समझा और उनकी एक बहुत प्रसिद्ध पेंटिंग 'ले डेमोइजेल्स ड'अविग्नॉन' या 'द यंग विमेन ऑफ़ अविग्नॉन' ऐसी कुछ लड़कियों का चित्र है जो उनकी व्यथा को कैनवस पर उकेरने का एक विलक्षण प्रयास है। इसने स्त्री नग्नता की परंपराओं को चुनौती दी है और एक विद्रोह शैली की आधुनिक कला की राह खोली। पिकासो म्यूजियम में बहुत भीड़ होती है और आपको समय से पहले यहाँ पहुँचना होगा ताकि आप भीतर प्रवेश पा सकें।

(संस्मरण : अभिषेक त्रिपाठी, आयरलैंड)
संपादन : अनिल शर्मा 'जोशी'

साहित्यकार सविता चड्ढा की पुस्तकों 'नारी अंतर्वेदना की कहानियां' और 'हिंदी पत्रकारिता भूमिका एवं समीक्षा' के लोकार्पण के अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार एवं पत्रकार

हिंदी पत्रकारिता
भूमिका एवं
समीक्षा का
लोकार्पण पंजाब
केसरी की
चेयरपर्सन श्रीमती
किरण चोपड़ा, श्री



अनिल जोशी, श्री ऋषि कुमार शर्मा, डॉ. मुक्ता, श्री ओमप्रकाश प्रजापति एवं श्री मनमोहन शर्मा जी के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। लेखिका सविता चड्ढा ने उपस्थित सभी सम्माननीय अतिथियों का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करते हुए कहा कि उनका लेखन अपने पाठकों और शुभचिंतकों की शुभकामनाओं और आशीर्वाद से ही संभव हो पाता है। उन्होंने समय पर पुस्तकें प्रकाशित करने के लिए तत्पर रहने हेतु प्रकाशकों का भी आभार व्यक्त किया।

पंजाब केसरी की चेयरपर्सन और वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब की संस्थापिका श्रीमती किरण चोपड़ा ने इन पुस्तकों की लेखिका की विविध विधाओं के लेखन की सराहना की और आज लोकार्पित पुस्तक की प्रशंसा की।

श्री अनिल जोशी ने भी लेखिका को इस अवसर पर अपनी शुभकामनाएं देते हुए उनके बहुआयामी व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और उनकी विभिन्न कृतियों की चर्चा की तथा यशस्वी साहित्यिक यात्रा की शुभाशंसा दी।

विश्व परिक्रमा

अंतरराष्ट्रीय गिरमिट सम्मेलन



गत 9 मई, 2024 को, वेल्श संसद (सेनेड) के प्रतिष्ठित सभागार में अंतरराष्ट्रीय गिरमिट सम्मेलन आयोजित किया गया। आई एन जे एस ट्रस्ट द्वारा आयोजित और वेल्श सरकार द्वारा समर्थित, इस सम्मेलन में

विद्वानों, गणमान्य व्यक्तियों और सांस्कृतिक रूप से उत्साही लोगों को गिरमिटियाओं की स्थायी विरासत का पता लगाने के लिए बुलाया गया। सम्मेलन की शुरुआत वेल्स के पूर्व प्रथम मंत्री मार्क ड्रेकफोर्ड ने की। सम्मेलन आयोजक प्रो. डॉ. केशव सिंघल ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। लॉर्ड भीखू पारेख ने भारतीय प्रवासियों पर मार्मिक विचार प्रस्तुत किये। मिस वर्ल्ड इंटरनेशनल की अध्यक्ष और सी.ई.ओ. जूलिया मोर्ले ने सांस्कृतिक विविधता में गिरमिटियाओं के अमूल्य योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें हार्दिक बधाई दी। पी.आई.ओ. टी. वी., के अध्यक्ष मुनीश गुप्ता ने गिरमिटियाओं के शाश्वत लोकाचार - 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'; को स्पष्ट रूप से व्यक्त किया। सम्मेलन में गिरमिटिया लोगों पर केन्द्रित एक विशेष वृत्तचित्र का अनावरण भी हुआ। रोबोटिक्स और ए.आई. विशेषज्ञ अनिरुद्ध सिंघल ने परंपरा और नवाचार को मिलाते हुए गिरमिटिया संगीत के हस्ताक्षरों की खोज के साथ कार्यवाही का समापन किया। कार्यक्रम को वॉन गेथिंग, प्रथम मंत्री और प्रोफेसर उजो इवोबी सी बी ई, ने भी संबोधित से किया। इस सत्र का समापन ली स्टोन की एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि कविता के साथ हुआ। डॉ. किनेश पाथेर ने दक्षिण अफ्रीका के संदर्भ में गिरमिट विरासत से इसके संबंध पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में मिस वर्ल्ड करोलिना बिलावस्का, मिस वर्ल्ड पोलैंड, मिस इंग्लैंड 2022 जेसिका गेगन और मिस इंग्लैंड 2019 डॉ. भाषा मुखर्जी भी उपस्थित रही। अंतरराष्ट्रीय गिरमिट सम्मेलन 'गिरमिट से परमिट' तक ने स्मरण, उत्सव और प्रेरणा के एक प्रकाश स्तंभ के रूप में कार्य किया, जिसने गिरमिटियों की स्थायी विरासत और मानवता के लिए उनके गहन योगदान की पुष्टि की।

‘रामचरित मानस’, ‘पंचतंत्र’ तथा ‘सहृदय लोक लोचन’ की पांडुलिपि विश्व विरासत सूची में शामिल



‘एशिया और प्रशांत क्षेत्र के लिए विश्व की स्मृति समिति (मेमोरी ऑफ द वर्ल्ड कमेटी फॉर एशिया एंड द पैसिफिक) की मई माह में मंगोलिया की राजधानी उलानबटोर में आयोजित 10वीं बैठक में रामचरित मानस, पंचतंत्र तथा 'सहृदय लोक लोचन' की पांडुलिपियाँ, विश्व विरासत सूची में शामिल करने का फैसला लिया गया। इस बैठक में संयुक्त राष्ट्र से 38 प्रतिनिधि और 40 पर्यवेक्षकों ने भाग लिया। इसमें इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के डीन एवं कला निधि प्रभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. रमेश चंद्र गौड़ ने भारत की ओर से उपरोक्त तीनों प्रविष्टियाँ प्रस्तुत की। इनमें सहृदयलोक-लोचन की पांडुलिपि (भारतीय काव्यशास्त्र का महत्वपूर्ण पाठ), पञ्चतन्त्र की पांडुलिपि और तुलसीदास के रामचरितमानस की चित्रित पांडुलिपि शामिल थी। रजिस्टर उप-समिति द्वारा विस्तृत चर्चा और सिफारिशों के बाद तथा सदस्य देशों के प्रतिनिधियों द्वारा वोटिंग के बाद तीनों नामांकन सफलतापूर्वक शामिल हो गए। ‘रामचरितमानस’, ‘पञ्चतन्त्र’ और ‘सहृदयलोक-लोचन’ ऐसी कालजयी कृतियाँ हैं जिन्होंने भारतीय साहित्य और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है।

अमेरिका में कवि सम्मलेन



विगत 19 मई को नॉर्थ कैरोलाइना अमेरिका में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति और हिंदी विकास मंडल की ओर से हिन्दू भवन, मोरिस्विल्ल, के प्रांगण में एक विराट कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में कवि अरुण जैमिनी सहित कई कवियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के आयोजन में अंतरराष्ट्रीय हिंदी समिति की संस्थापक सदस्य एवं वरिष्ठ प्रवासी हिंदी साहित्यकार सुधा ओम धींगरा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सुधा ओम धींगरा वर्ष 1987 से अमेरिका में कवि सम्मेलन सहित अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन करती रही हैं।

‘सावरकर’ पर पुस्तक का लोकार्पण



नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में 30 मई, 2024 को हिमाचल प्रदेश के महामहिम राज्यपाल श्री शिवप्रताप शुक्ल, 'विनायक दामोदर सावरकर : नायक बनाम प्रतिनायक' पुस्तक का विमोचन करते हुए। साथ में पुस्तक के लेखक श्री कमलाकांत त्रिपाठी एवं अन्य वक्तागण - जेएनयू के प्रो. ओम प्रकाश सिंह, लेखक प्रभात रंजन, प्रो. मलखान सिंह और प्रो. सोनाली चित्तालकर, दिल्ली।

जानकी नवमी महोत्सव, सिंगापुर - 2024



महोत्सव - 2024 का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय उच्चायोग सिंगापुर में सेवाएँ 'मैथिल इन सिंगापुर' समूह का गठन सिंगापुर में प्रवासी मैथिल भारतीयों ने नौ वर्ष पूर्व किया था। प्रदान कर रहे श्री शिवजी तिवारी, पत्नी मीना तिवारी के साथ मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे।

सिंगापुर में प्रवास कर रहे मैथिल समुदाय की ओर से मिथिला की प्रसिद्ध चित्रकला से सजी साड़ी, खोंड़चा, बंडी, रुमाल देकर पारम्परिक विदाई गीत-गायन के साथ श्री शिवजी तिवारी एवं श्रीमती मीना तिवारी को पुत्री और जमाता की तरह विदाई दी गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री विदेशी धरती पर शिवजी तिवारी ने भावुक होते हुए कहा कि अपने पूरे कार्यकाल में इस तरह का आतिथ्य-सत्कार मिथिला की संस्कृति और स्नेहपूर्ण व्यवहार उन्हें कहीं नहीं मिला। इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में वागीशा झा, कामाक्षी झा, का प्रचार-प्रसार कर अभिनव अंजनी चौधरी, प्रिशा सिंह और आद्या श्रीवास्तव सहित सभी बाल कलाकारों की रहे 'मैथिल इन प्रस्तुतियों ने उपस्थित अतिथियों का मन मोह लिया। शालिनी सिंह, खुशबू मिश्रा और अंजनी चौधरी सिंगापुर समूह द्वारा ने कविता, गीत, आरती और लोकगीत के माध्यम से माता सीता के जन्मोत्सव की सुन्दर छटा प्रस्तुत शनिवार, 18 मई की। कार्यक्रम की संचालक आराधना झा श्रीवास्तव ने माता सीता के नाम और उनसे जुड़े कुछ 2024 को चांगी महत्वपूर्ण तथ्यों की चर्चा की। स्वागत-उद्बोधन राजीव कुमार मिश्रा और धन्यवाद-ज्ञापन समीर कुमार बिजनेस पार्क, ने किया। रितेश झा, राजीव कुमार मिश्रा एवं सिद्धार्थ साह ने कार्यक्रम के आयोजन में विशेष सिंगापुर में पहली सहयोग दिया। जानकी नवमी महोत्सव की परिकल्पना, संयोजन और आयोजन में अंजनी कुमार बार 'जानकी नवमी चौधरी, आराधना झा श्रीवास्तव और समीर कुमार की महत्वपूर्ण भूमिका रही। उल्लेखनीय है कि

साहित्य मंच का आयोजन

साहित्य अकादमी तथा भारत में लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास के संयुक्त तत्वावधान में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में विलनिअस यूनिवर्सिटी के भाषाशास्त्र संकाय के अध्यक्ष एवं लिथुआनिया के पूर्व संस्कृति मंत्री मिंडौगस क्वितकौस्कस ने बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक शहर विलनिअस तथा उसकी सांस्कृतिक-



ऐतिहासिक स्मृतियों पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। यह व्याख्यान पॉवर पाइंट प्रजेंटेशन के साथ दिया गया जिसमें विभिन्न चित्र और सूचनाएँ थीं। उन्होंने बताया कि लिथुआनिया में लगभग 20 भाषाएँ बोली जाती हैं, उनमें 12 भाषाएँ प्रमुख हैं - पोलिश, जर्मन, लैटिन, हिब्रू, रशियन, कतर, लिथुआनियाई, रोमानियन आदि। उन्होंने बताया कि इन भाषाओं का महत्व और उपयोगिता युद्ध, व्यापार और राजनीतिक उतार-चढ़ाव के साथ घटती-बढ़ती रही है। उन्होंने वहाँ के चार प्रमुख आधुनिक लेखकों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि उनके द्वारा चलाए गए साहित्यिक आंदोलनों के द्वारा विलनिअस में बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक परिवेश तैयार हुआ। लिथुआनिया की प्रसिद्ध कवयित्री जुडिता के बारे में उन्होंने बताया कि जुडिता ने आधुनिक लिथुआनियाई साहित्य में वहाँ के पूर्वजों की पीढ़ी को प्रस्तुत किया है।

स्पेन में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की प्रतिमा स्थापित



गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर की 163वीं जयंती पर 7 मई, 2024 को स्पेन के ब्लाडोलिड में कैपो ग्रांडे पार्क में अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंध परिषद द्वारा दान की गई एक प्रतिमा का उद्घाटन किया गया।

डॉ. मृदुल कीर्ति सम्मानित

भारतीय दर्शन और प्राच्य विद्या विशेषज्ञ डॉ. मृदुल कीर्ति को 'श्यामसुंदर गोयनका त्रिवेणी समागम पुरस्कार '12 मई को मुम्बई के 'द रायल ओपेरा हाउस' में प्रदान किया गया।



कमला गोइन्का फ़ाउंडेशन

कमला गोइन्का फ़ाउंडेशन की कार्यकारी समिति ने एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि वर्ष 2024 के "श्यामसुंदर गोइन्का त्रिवेणी समागम पुरस्कार" की घोषणा कर दी गई है। यह पुरस्कार श्री श्याम गोइन्का जी की स्मृति में दिया जा रहा है जो साहित्य, समाज व आध्यात्म तीनों क्षेत्रों में अपने सराहनीय कार्यों तथा हिन्दी भाषा को प्रोत्साहित करने के अथक् प्रयास के लिए अखिल भारतीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त थे।

यह गौरवपूर्ण पुरस्कार मेरठ की सुप्रसिद्ध रचनाकार डॉ॰ मृदुल कीर्ति जी को दिया जाएगा जो कि साहित्यिक, आध्यात्मिक व सामाजिक तीनों क्षेत्रों में पिछले चार दशकों से भी अधिक के कार्यकाल से सतत सक्रिय हैं। सांख्ययोग दर्शन, पतञ्जलि योग दर्शन, सामवेद, ईशादि नौ उपनिषदों, श्रीमद्भगवद्गीता, अष्टावक्र गीता, शंकराचार्य विवेक चूड़ामणि आदि इन आर्ष ग्रन्थों के मूल ऋषि प्रणीत संस्कृत ऋचाओं का विभिन्न छंदों में हिन्दी काव्यानुवाद करनेवाली प्रतिष्ठित डॉ॰ मृदुल कीर्ति को इस गौरवपूर्ण पुरस्कार के लिए चयनित कर फ़ाउण्डेशन स्वयं को गौरान्वित अनुभव कर रहा है।

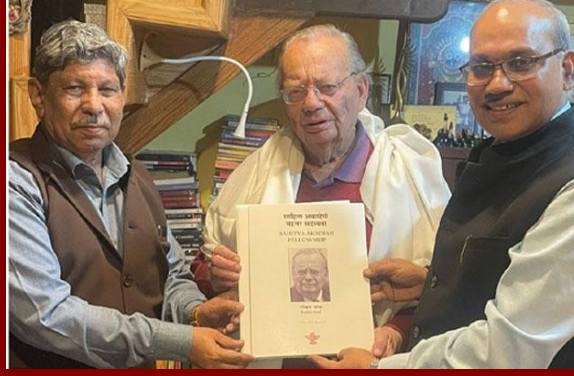
इस पुरस्कार समारोह के अवसर पर हमने डॉ॰ कुमार विश्वास की काव्य-संध्या का आयोजन किया है जो रविवार, दिनांक 12 मई, 2024 को मुम्बई के, अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध सभागार, द रॉयल ओपेरा हाउस में संपन्न होगा। आप इसमें सस्नेह सादर आमंत्रित हैं।

दिनांक: रविवार, 12 मई, 2024

शाम 5:00 बजे

स्थान: द रॉयल ओपेरा हाउस, चरनी रोड, मुम्बई

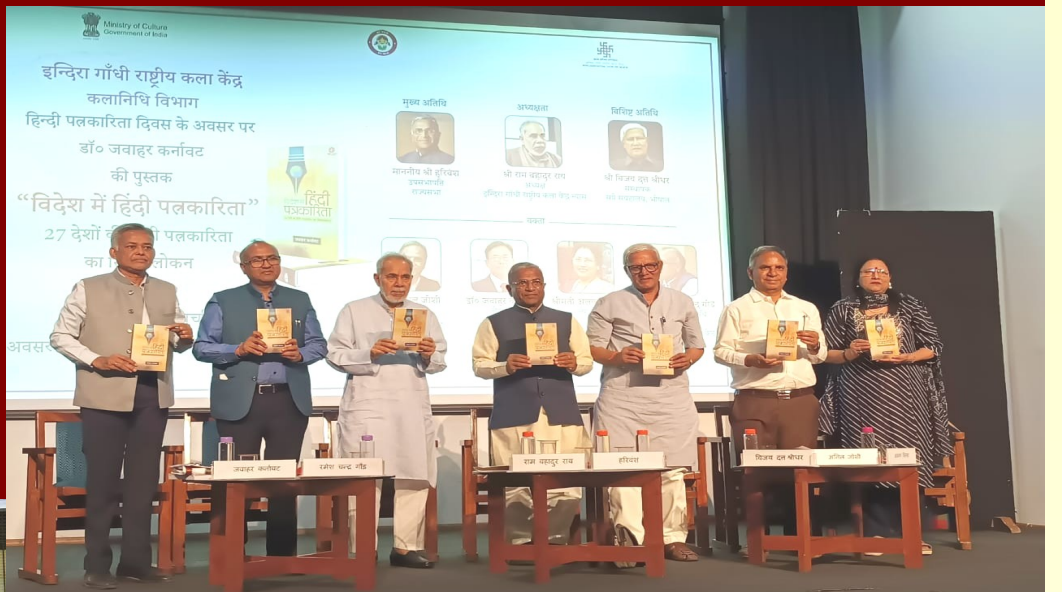
रस्किन बॉण्ड को साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता



सुप्रसिद्ध लेखक रस्किन बॉण्ड को साहित्य अकादमी की महत्तर सदस्यता प्रदान की गयी। उल्लेखनीय है रस्किन बांड को उनके कहानी-संग्रह 'आवर ट्रीज़ स्टिल ग्रो इन देहरा' के लिए 1992 में साहित्य अकादमी पुरस्कार, 1999 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' तथा 2019 में 'पद्मभूषण' तथा साहित्य अकादमी द्वारा 'बाल साहित्य पुरस्कार' (2012) से भी सम्मानित किया जा चुका है।

“गुलामी के कालखंड में भी विदेशों में हिंदी पत्रकारिता ने उच्च नैतिक मापदंड स्थापित किए” - श्री हरिवंश, उपसभापति, राज्यसभा

(जवाहर कर्नावट की पुस्तक का लोकार्पण समारोह)



30 मई 2024, इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नई दिल्ली, “ गुलामी की अवस्था में भी हिंदी पत्रकारिता विदेश में अपने लिए कैसे उच्च नैतिक मानदंड स्थापित कर रही थी, जवाहर कर्नावट की पुस्तक 'विदेश में हिंदी पत्रकारिता' हमें इसकी महत्वपूर्ण सूचना देती है।”

उक्त विचार राज्यसभा के माननीय उपसभापति श्री हरिवंश ने उपरोक्त पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए व्यक्त किए। उन्होंने इस पुस्तक की सराहना करते हुए कहा कि भारत से बाहर हिंदी पत्रकारिता को जानने के लिए यह संदर्भ पुस्तक होगी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय ने इस पुस्तक की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा कि इसमें 175 वर्षों की हिंदी पत्रकारिता का उल्लेख है। उन्होंने श्री कर्नावट को सुझाव दिया कि अगले संस्करण में इस पुस्तक का नाम रखा जाए 'दुनियाँभर में हिंदी पत्रकारिता'। उन्होंने इस पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा कि विश्व भर की हिंदी पत्रकारिता से हमें यह पता चलता है कि प्रेम का धागा भारत से चलता है फिर भारत आकर वर्तुल बनाता है। श्री विजय दत्त श्रीधर ने कहा- “यह पुस्तक हमें बताती है कि एक भारतीय कैसे अपने साथ भारतीयता को बनाए रखता है”। विमोचित पुस्तक से संदर्भ लेकर उन्होंने कहा कि गिरमिटिया मजदूर जब अपने देश से जा रहे थे तब वे अपने साथ गंगाजल, तुलसी और रामायण का गुटका लेकर गए थे।

वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने कहा – “विदेश में हिंदी पत्रकारिता को समझने के लिए यह अकादमिक पुस्तक है। इस पुस्तक से हमें यह जानकारी मिलती है कि विदेश में हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत सामान्य स्थिति में नहीं हुई थी, यह मजबूरी की पत्रकारिता थी। “कथाकार अलका सिन्हा ने अपने वक्तव्य में पुस्तक के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने पुस्तक से कुछ सरस एवं मार्मिक प्रसंगों का पाठ किया। इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पिछले कुछ वर्षों से पत्रकारिता दिवस के अवसर पर पत्रकारिता से संबंधित कुछ विशेष कार्यक्रम का आयोजन करता रहा है, इस पुस्तक का विमोचन एवं परिचर्चा उसी कड़ी में है।

‘विज्ञान कथा लेखन और चुनौतियाँ’ विषय पर चर्चा



‘वातायन-यूके संगोष्ठी-183’

अध्यक्ष – देवेन्द्र मेवाड़ी, प्रतिभागी : मनीषा कुलश्रेष्ठ, शार्दूला नोगजा, सूत्रधार : ऋचा जैन

सामाजिक सरोकार को समर्पित है 'चलो फिर से शुरू करें' की कहानियां

लेखक : सुधा ओम ढींगरा

प्रकाशक : शिवना प्रकाशन

मूल्य : 250 रुपए मात्र

शि

वना प्रकाशन से प्रकाशित 'चलो फिर से शुरू करें' आकर्षक मुखपृष्ठ एवं कलेवर सहित सामाजिक सरोकारों पर केन्द्रित कहानी संग्रह। हिंदी के प्रवासी साहित्यकारों के मध्य अमेरिका में एक स्थापित हस्ताक्षर 'सुधा ओम ढींगरा' का यह नवीनतम कहानी संग्रह है। इस संग्रह की पहली कहानी है 'कभी देर नहीं होती' 'विदेश में बसे भारतीयों के मनोजगत में निरंतर चलते रहने वाले द्वंद्व को यह कहानी बखूबी व्यक्त करती है। इसी तरह एक अन्य कहानी जो पाठक को बाँधे रखती है वह है - 'वे अजनबी और गाड़ी का सफ़र' ड्रग्स के कथानक पर केन्द्रित शुरू से अंत तक बहुत नाटकीय अंदाज़ में कहानी को बड़े ही रोचक तरीके से लेखिका ने लिखा है। कहानी पाठक को निरंतर बाँधकर रखने में सक्षम है। पात्रों और परिस्थितियों को बहुत सुघड़ता से गढ़ा गया है।

'वे अजनबी और गाड़ी का सफ़र' कहानी का विषय भी बड़ा संवेदनशील और ज्वलंत है। अच्छाई और बुराई दोनों से दुनियाँ का कोई भी देश,

कोई भी समाज अछूता नहीं है। वेश्यावृत्ति के लिए मानव तस्करी और ड्रग्स के लिए तस्करी के विभिन्न हथकंडे आपराधिक तत्व हमेशा से अपनाते रहते हैं। ड्रग्स के कथानक पर शुरू से लेकर अंत तक बहुत नाटकीय अंदाज़ में कहानी को बहुत रोचक तरीके से लेखिका ने लिखा है। कहानी के दो पात्र पत्रकारिता जगत, से हैं और मूलतः भारत से हैं। उनके नज़रिये से, बातचीत से, उनकी जागरूकता से और यात्रा से पूरी कहानी में भारत के रेलवे स्टेशन से लेकर अमेरिका के रेलवे स्टेशन की तुलना, दो संस्कृतियों की समझ, मानव तस्करी, एक अच्छे नागरिक के कर्तव्य, ऑफिसरों का पूर्ण मुस्तैदी से अपराधियों को पकड़ना और अंत में कहानी को उसके लक्ष्य तक पहुँचाना बहुत सजीव बन पड़ा है।

शुरू से झुंडों में रहते आए मानवों की सभ्यता के विकास के साथ ही समाज ने जन्म लिया। समाज यानी मानवों का समूह जिसमें रहकर मानव कुछ नियमों का पालन करेंगे, जिससे अराजकता पर अंकुश लग सके और इंसानों और जानवरों की जीवन शैली और मानसिकता में अंतर हो। सभ्य मानव सभ्यता में फिर धर्म ने जन्म लिया। एक सुगठित, संस्कारी, धार्मिक समाज की उत्पत्ति के साथ ही इंसान और जानवर दो अलग-अलग प्राणी हो गए। इंसानों का बौद्धिक स्तर अन्य प्राणियों की तुलना में उच्च स्तर का होता है। इंसान अधिक संवेदनशील और सभ्य होते हैं। आए दिन धार्मिक स्थलों पर यौन उत्पीड़न के समाचार आते रहते हैं।

इसी तरह "उदास बेनूर आँखें" भी इस संग्रह की एक महत्वपूर्ण कहानी है। इस कहानी की प्रस्तुति बहुत मौलिक है। अमेरिका की पृष्ठभूमि पर सामाजिक सरोकारों को उजागर करती कहानी का कथानक दिल को छू लेता है। साथ ही एच.आई.वी. की बीमारी के प्रति एक नए दृष्टिकोण की ओर सचेत करता है।

संग्रह की शीर्षक कहानी 'चलो फिर से शुरू करें' पात्रों के मन के संवेगों का चित्रण बहुत सुंदर ढंग से गढ़ती है। सुधा ओम ढींगरा के लेखन की यह खासियत रही है कि वे नॉस्टेल्लिया के वेग में बहे बिना दो धरातलों के फ़र्क को बखूबी अपने लेखन से तराश कर एक मूर्त रूप देती हैं।

संकलन की भाषा सरल एवं बोध गम्य है। संकलन की कहानियाँ सामाजिक सरोकारों के विषयों पर केन्द्रित हैं। इस संग्रह की अन्य कहानियाँ जैसे - "वह जिन्दा हैं" और 'कंटीली झाड़ी' बहुत अर्थपूर्ण और संदेशवाहक कहानियाँ हैं। गूढ़ बात को सरलता और सहजता से अपनी कहानियों में कह जाना सुधा ओम ढींगरा के लेखन की विशेषता है। संग्रह की अन्य महत्वपूर्ण कहानियों में 'अबूझ पहेली' "कल हम कहाँ तुम कहाँ" को शामिल किया जा सकता है। सुधा ओम ढींगरा की कहानियाँ पाठक पर गहरा प्रभाव छोड़ती हैं।

कहानियों में भाषा और शिल्प कसा हुई है, कोई दोहराव नहीं है और अपने उद्देश्य को पाने में सफल हैं। यह एक पठनीय रोचक, मनोरंजक और ज्ञानवर्धक सामाजिक सरोकारों को समर्पित कहानी संग्रह है जो भारी भरकम शब्दों में ज्ञान बाँचने के बजाए मनोरंजक और संदेशवाहक के रूप में असर करता है।

समीक्षक: रेखा भाटिया
प्रस्तुति: अरविंद पथिक

विदेश में कामकाजी कामगारों के द्वंद्व को उकेरता उपन्यास है 'अरुणिमा'

लेखक : रीता कौशल

प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन

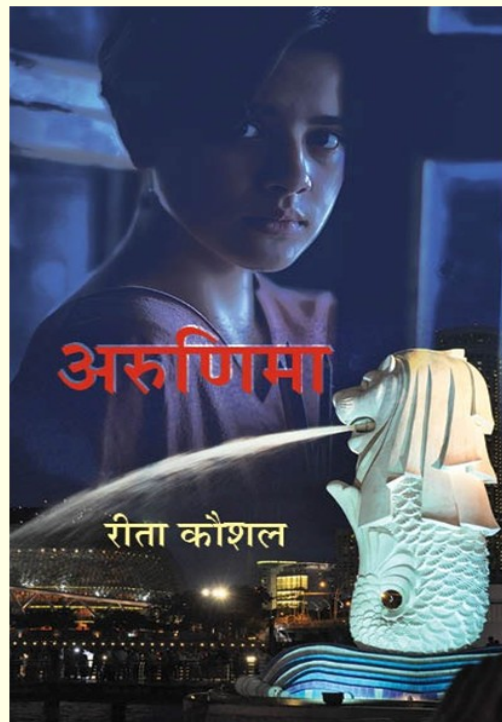
मूल्य : 234 रुपए मात्र

अ

रुणिमा हिंदी का एक ऐसा उपन्यास है जिसमें लेखिका रीता कौशल के द्वारा सिंगापुर और अन्य एशियाई देशों में घरेलू कामकाजों के लिए रखी जाने वाली मेड और उनकी समस्याओं को बारीकी से उठाया गया है।

इस उपन्यास की प्रमुख पात्र अरुणिमा के माध्यम से रचनाकार ने मध्यवर्गीय परिवारों में व्याप्त उस मानसिकता को रेखांकित किया है जिसके द्वारा अभी भी कुल को चलाने के लिए बेटों की आवश्यकता महसूस की जाती है।

अरुणिमा की माँ को पहले से दो कन्याएँ संतान के रूप में रहती हैं और तीसरी कन्या उनके लिए एक बड़ी चुनौती के रूप में गर्भ में आती है। वह गर्भ में ही भ्रूण हत्या करने का संकल्प लेती हैं



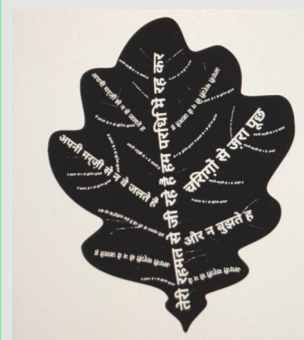
लेकिन अरुणिमा के बड़े मौसा दुबे जी को कोई संतान न होने से पत्नी को अरुणिमा को गोद लेने के लिए सहमत कर लेते हैं। उसके कुछ दिनों बाद ही दुबे जी की पत्नी सावित्री को भी गर्भ ठहर जाता है और दो पुत्रों को जन्म देती हैं। शिक्षक दुबे जी की अचानक एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है और सावित्री और उनके परिवार पर एक दुखों का पहाड़ टूट पड़ता है।

मुख्य कथानक के साथ रिया-अर्णव तथा निराली व उसके परिवार की कहानी के माध्यम से लेखिका ने बारीकी से आर्थिक व शारीरिक शोषण के ऐसे बिंब उभारे हैं जो पाठक को केवल सोचने के लिए विवश करते हैं। इस उपन्यास में गहराई के साथ सिंगापुर व उसके परिवेश को चित्रित किया गया है। यह उपन्यास एक नवीन कथानक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है जिससे भारत के बाहर रहने वाली घरेलू कामकाजी कामगारों की समस्याओं पर गहराई से प्रकाश पड़ता है।

उपन्यास का शिल्प प्रभावी है। कथानक का विकास शनैः शनैः सहजता के साथ होता है। कथानक पाठकों को अपनी ओर बाँधने में सफल होता है। भाषा सरल, सहज के साथ पात्रानुकूल है। पात्रों का मानसिकता के अनुसार आचरण, रचना को उत्कृष्टता प्रदान करता है। शैली की दृष्टि से लेखक की विवरणात्मक, व्यंग्यात्मक और विवेचनात्मक शैली परिवेश अनुकूल है।

समीक्षक : बहादुर सिंह परमार
प्रस्तुति: डॉ. नवीन कुमार नीरज

चिराग



जय वर्मा की यह कविता सुप्रतिष्ठित नाट्यम लाइब्रेरी की दीवार पर प्रदर्शित है।

तेरी रहमत से जी रहे हैं हम
परिधि में रहकर
चिरागों से ज़रा पूछ
अपनी मर्जी से न वे जलते हैं
और न बुझते हैं
उनकी जलती हुई लौ को देख
अपने पास न वे कुछ रखते हैं
लाल अग्नि में जलकर खामोश हो जाते हैं
रोशनी किसको मिली वे नहीं पूछते
अंधेरो में कौन खो गये वे नहीं जानते
उनका काम था राह दिखाना
वे दिखाते रहे
उनकी फ़ितरत थी जलना
वे जलते रहे।

-जय वर्मा, ब्रिटेन

साक्षात्कार

दिव्या माथुर यानी अनवरत साहित्य कर्मी। अमृत महोत्सव यानी 75वें जन्मदिन के विशेष अवसर पर ब्रिटेन में साहित्यकार दिव्या माथुर जी का हिन्दी राइटर्स गिल्ड कनाडा की डॉ. शैलजा सक्सेना द्वारा लिया गया साक्षात्कार।

आपको 75वें जन्मदिवस की बहुत बधाई। आपकी कर्मठता और रचनात्मकता अद्भुत है इसलिए आज आपके जीवन और लेखन के बारे में कुछ बातचीत करने की सदिच्छा है।

प्रश्न 1. सबसे पहले तो यह प्रश्न कि आपने कब से लिखना शुरू किया और इस यात्रा में आपने गद्य और पद्य में बहुत कुछ लिखा। आप कैसे विभिन्न विधाओं की ओर मुड़ीं, इस बारे में कुछ बताइए।

उत्तर : धन्यवाद शैलजा जी, आपने मुझे इस साक्षात्कार के योग्य समझा। मेरा जन्म दिल्ली के एक साहित्यिक और संगीतप्रेमी संयुक्त परिवार में हुआ जहाँ नियमित संगीत और नृत्य की महफ़िलें जमती थीं और नाटकों का भी मंचन होता था। मेरे दादा, बिशन दयाल 'शाद', कलाकार और मशहूर शायर थे जिनका दिल्ली के नामी शायरों के साथ उठाना-बैठाना होता था। जब मैं बारह-तेरह वर्ष की थी तब लुका छिपी कर कविताएँ लिखना शुरू की। कॉलेज में कहानियाँ लिखीं जो प्रकाशित और पुरस्कृत भी हुईं। सात काव्य संग्रहों के प्रकाशन और मूर्धन्य कवियों को पढ़ने/सुनने के बाद, मुझे एहसास हुआ कि मैं अच्छी कविताएँ नहीं लिख रही थी तो कहानी विधा अपना ली। वर्ष 1971-2016 के दौरान फुलटाइम नौकरी में उपन्यास पूरे करने का समय नहीं मिला। मेरी कहानियाँ आमतौर पर बहुत लंबी होती हैं। मैंने नाटक और यात्रा विवरण और संस्मरण भी लिखे हैं। हाँ, लंदन का वातावरण मुझे रचनात्मकता प्रदान करने में सहयोगी रहा।

प्रश्न 2. आप लेखक, प्रबंधक, आयोजक और विभिन्न संस्थाओं की संस्थापक निदेशिका भी हैं। इन सबके बीच आप समय का संतुलन कैसे बना पाती हैं, कृपया हमें भी इसका रहस्य बताइए।

उत्तर :जैसा कि सब जानते ही हैं, मैं वर्कहॉलिक हूँ, मुझे ऊर्जा मिलती है नई प्रतिभाओं से, कुछ को मैं ढूँढ़ लेती हूँ, कुछ मुझे ढूँढ़ लेते हैं। विभिन्न लोगों से मिलने जुलने से भी आप सीखते हैं, सिखाते हैं; मेरे लिए यह एक अवर्चनीय सुख है। नेहरू केंद्र के माध्यम से भी मैंने बहुत सी नयी प्रतिभाओं को मंच दिया, वे मुझे आज भी स्नेह और सम्मान देते हैं। मेरे लिये यही सबसे बड़ा पुरस्कार है।

प्रश्न 3. आपने विभिन्न देशों के लेखकों की रचनाओं का संकलन और संपादन भी किया है। आज हिंदी का विस्तार भी हो रहा है, क्या आपको लगता है कि अच्छे प्रवासी लेखकों की संख्या बढ़ी है या वही कुछ लोग लिख रहे हैं जो पहले से लिखते आ रहे हैं? यानी प्रवासी हिंदी साहित्यकारों के भविष्य की स्थिति के बारे में आप क्या सोचती हैं?

उत्तर : वर्ष 1998 में नेहरू केंद्र में आयोजित एक कार्यक्रम में सलमान रशीद ने कहा कि इस वक्त भारत में महत्वपूर्ण लेखन नहीं हो रहा है तो मुझे बहुत दुःख हुआ। वैसे भी, अगर विश्वविद्यालयों में हिंदी के प्राध्यापकों को छोड़ दें तो भारत में क्या लिखा जा रहा है, वो जानना तो दूर की बात है, यहाँ प्रवासी क्या लिख रहे हैं, उस तक से अनभिज्ञ थे। मैंने उसी दिन सोचा कि क्यों न इस कमी को दूर किया जाए। इसलिए अल्प ज्ञान और अल्प सुविधाओं के रहते, मैंने अंग्रेजी में दो कहानी संग्रहों का संपादन किया - *Odyssey: Short Stories by Women Writers in Various Indian Languages* जिसमें सौभाग्यवश मुझे बहुत सी वरिष्ठ लेखिकाओं की कहानियाँ मिल गईं, जिनमें अनिता देसाई, उषा प्रियंवदा, सुषम बेदी, आतिया हुसैन, मेहरुनिसा परवेज़, नबनीता देव सेन और प्रतिभा रे आदि सम्मिलित हैं। फिर तो सम्पादन का चस्का लग गया, 'वतन की खुशबू', 'इक सफ़र साथ-साथ', 'देसी गर्ल्स', 'नेटिव सेन्ट', इत्यादि। जहाँ एक ओर सन 1985 में यहाँ हिंदी लेखक ढूँढ़ने से नहीं मिलते थे वहीं दूसरी ओर 1992-95 के दौरान नियमित संगोष्ठियाँ होने लगीं। मेरा अपना लेखन पीछे छूट गया लेकिन मुझे इसका अफ़सोस नहीं है।

प्रश्न 4. क्या आज प्रवासी लेखकों की एक सशक्त पहचान बन पाई है? आप प्रवासी हिंदी साहित्य के प्रति आलोचकों की राय में क्या परिवर्तन देखती हैं?

उत्तर :हिन्दी को अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही है। उसका एक मूल कारण है - प्रवासी भारतीय, जो एक लम्बे समय से भारत की भाषा, कला और संस्कृति की ख़ुशबू को विदेशों में फैलाने का महत्वपूर्ण प्रयास करते आ रहे हैं। समय तेज़ी से बदल रहा है। ज़ाहिर है कि हमारे साहित्य में भी बदलाव, व्याकुलता और बेचैनी छलक रही है जो हिन्दी साहित्य को अपनी मौलिकता से समृद्ध कर सकती है। भारत में बहुत से लेखक, आलोचक, बिना किसी अध्ययन-

मनन के, आज भी यह मानते हैं कि प्रवासी साहित्य नोस्टेलजिया का ही साहित्य है। अपने खर्चे पर प्रवासी लेखक अपनी पुस्तकों को प्रकाशित करवा लेते हैं और उसका लोकार्पण कर संतोष पा लेते हैं। पर इन सभी सत प्रयत्नों का फ़ायदा क्या है? किसे है? प्रवासी लेखकों के हिन्दी में लिखने से जुड़े सुख और दुःख दोनों हैं और चुनौतियाँ अनंत। प्रवासी लेखक के लिए भारत कोई भावुकता से भर देने वाला संदर्भ मात्र नहीं है; भारत उसे एक ऐसी सामर्थ्य देता है जो 'बियान्ड रि कॉल' माना जाता है। समय के सामने प्रवासी संवेदना एक विशेष आत्मविश्वास के साथ खड़ी हो सकती है। मैं यथार्थवादी हूँ, चोली फ़ाड़ कर प्रगतिशील कहलाना मुझे पसंद नहीं और न ही मुझे यह समझ में आता है कि बढ़ा-चढ़ा कर लिख देने से क्या समाज का सुधार हो जाएगा। सच्चाई का सामना किए बगैर कोई भी लड़ाई कैसे जीती जा सकती है?

प्रश्न 5. आपकी कहानियों की अनेक स्त्रियाँ बहुत खुला व्यवहार करने वाली और पारंपरिक स्त्री छवि से दूर हैं जैसे 'नीली डायरी' की स्त्रियाँ! क्या आपका पाठक और आलोचक वर्ग ऐसी अपारंपरिक स्त्री छवि को स्वीकार कर पाया है?

उत्तर :आज के युग में न पुरुष आर्य रहे और न स्त्री पूज्या। सृष्टि हेतु दोनों तत्वों में सामन्जस्य अनिवार्य है किन्तु करुणा, सहानुभूति, सम्मान, सहकारिता जैसे सुसंस्कृत भाव अधिकांशतः लिप्सा, उपेक्षा, ताड़ना और तिरस्कार जैसे विकृत भावों में परिणत हो गये हैं। समय के साथ, अधिकाधिक उग्र होता प्रतिशोधात्मक नारी विमर्श भी अब पुरुष वर्ग पर भारी पड़ने लगा है। अब पुरुष विमर्श का सूत्रपात भी हो चुका है। मुझे साहित्य को ख़ाँचों में विभाजित करना अच्छा नहीं लगता किंतु यह तो मानना ही होगा कि 'विमर्श' के ज़रिए उपेक्षित विषय को लेकर जनता को सावधान किया जा सकता है। यूँ तो, विसंगतियाँ किस क्षेत्र में नहीं हैं? यही विसंगतियाँ ही तो लेखक को लिखने के लिए प्रेरित करती हैं। नारी के साथ-साथ जब तक पुरुष नहीं बदलेगा तब तक बात आगे नहीं बढ़ेगी। सिर्फ़ कानून बनाने से काम नहीं चलेगा। मेरी बहुत सी कहानियों में पुरुषों की समस्याओं का उल्लेख है। मेरा नया उपन्यास, 'तिलिस्म', पुरुष प्रधान रचना है, इसमें मैंने कई नए विषयों को उठाया है, बाकी आलोचक जाने। वैसे प्रवासी लेखन की समालोचना ही हो रही है, सकारात्मक आलोचना आटे में नमक बराबर भी नहीं है।

प्रश्न 6. भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति में आप किसे बेहतररीन पाती हैं और पाश्चात्य संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को किस हद तक प्रभावित किया है?

उत्तर :मेरी कहानियाँ अक्सर उन महिलाओं की अभिव्यक्तियाँ हैं जिन्होंने अपनी जन्मभूमि से दूर रहना चुना है और जो उन देशों में विकसित हुई हैं जहाँ वे अब रहती हैं। वे हमें उन देशों पर एक दृष्टिकोण और टिप्पणी प्रदान करती हैं जिन्हें उन्होंने अपनाया है। भारत में महिलाओं की उपलब्धियाँ कभी भी पूरी तरह से व्यक्तिगत नहीं होतीं। वे पुरुषों की तुलना में अभूतपूर्व कड़ी मेहनत करती हैं फिर भी उन्हें पूर्वाग्रह, हिंसा, कम संसाधनों और कम वेतन आदि का शिकार होना पड़ता है; यहाँ यह सब कम है, एकल महिला के लिए यहाँ स्वतंत्र रूप से जीना बहुत आसान है। भारत में औरत के सहने और निभाने पर ही बहुत से विवाह सफल माने जाते हैं।

प्रश्न 8. आप नवोदित कहानीकारों और लेखकों को क्या संदेश देना चाहेंगी?

उत्तर : पढ़ें, पढ़ें और पढ़ें, पश्चिम के अंधानुकरण से बचें। साहित्य को राजनीति से दूर रखें। ऑनलाइन कार्यक्रमों में युवा पीढ़ी को काफ़ी प्रेरित किया है किंतु कुछ पसंदीदा मित्रों के मिलने पर अपने को बड़े-बड़े लेखकों के समकक्ष रख लेना भयंकर भूल है। अपनी मौलिकता और विशिष्टता पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

प्रश्न 9. आपकी प्रवासी लेखन से क्या अपेक्षाएँ हैं, आप इसे आज से 10 साल बाद किस रूप में देखना चाहेंगी?

उत्तर :वाणी प्रकाशन के लिए आजकल हम एक प्रवासी संग्रह संपादित कर रहे हैं जिसमें पचास वर्ष से कम आयु के अच्छे गद्य लेखकों की हमारी तलाश सचमुच निराशाजनक रही है। मुझ जैसे आशावादी व्यक्ति के लिए भी यह एक बड़ा झटका है। जैसा कि आप जानती हैं कि हम और हमारी संस्थाएँ हिंदी के प्रचार और प्रसार में दिन रात एक किए हैं पर इसे सफल बनाने के लिए हमारी अगली पीढ़ी को भी हाथ बढ़ाना होगा। एक नये भाव-बोध का साहित्य होना चाहिए। अधिकतर प्रवासी लेखक, खासतौर पर कवि, लकीर के फकीर हैं, उनकी रचनाओं में नया कुछ नहीं है जबकि उनके पास ढेरों अनुभव हैं।

शैलजा: दिव्या जी, समय देने के लिए आपका बहुत धन्यवाद। आपके द्वारा दिए गए उत्तर हमें अपने लेखन के प्रति ईमानदार बनने में मदद करेंगे। आप शतायु हों, आपका आशीष हम सबको मिलता रहे, यही कामना है।

साक्षात्कारकर्ता - डॉ. शैलजा सक्सेना

संरक्षक
अनिल शर्मा 'जोशी'

संपादक
डॉ. जयशंकर यादव
संपादन सहयोग
प्रो. स्वाति श्वेता, डॉ. अरविंद पथिक

तकनीकी सहयोग
कृष्णा कुमार

मुद्रक : आनंद प्रिंटर,
नई दिल्ली -110055

प्रतिक्रिया और सुझावों के लिए

ई मेल : vhpatrika@gmail.com, फोन : +91 9448635109